क्या 21वीं शताब्दी हो सकती है महाभारत का समय!!!

भारतीय इतिहास के दो महान महाकाव्यों- रामायण और महाभारत की कहानियाँ महायुद्ध पर आधारित हैं। रामायण में राम और रावण के बीच और महाभारत में पांडवों और कौरवों के बीच कुरुक्षेत्र का युद्ध इतिहास में अपनी अलग छाप छोड़ता है। यह दोनों ही युद्ध कोई साधारण युद्ध नहीं थे। दैवीय शक्तियों से बने यह अस्त्र-शस्त्र आज भी काफी प्रासंगिक हैं। दोनों ही युद्धों में विनाश के उन शस्त्रों का प्रयोग हुआ, जो भीषण विध्वंस मचाने में पूरी तरह सक्षम थे।

अस्त्र:- प्राचीन भारत में 'अस्त्र' शब्द का प्रयोग दरअसल उन हथियारों के लिए किया जाता था, जिन्हें मन्त्रों के द्वारा दूर से फेंका जाता था। इन्हें अग्नि, वायु, विद्युत और यान्त्रिक उपायों से प्रक्षेप किया जाता था।

शस्त्र:- आम तौर पर 'शस्त्र' शब्द का प्रयोग ऐसे खतरनाक हथियारों के लिए किया जाता है जिनके प्रहार से चोट पहुँचती हो या मृत्यु तक हो सकती हो।

मगर सोचने वाली बात तो यह है कि जो शस्त्र कलियुग में अब प्रयोग किए जाते हैं, उनका आविष्कार कई साल पहले हो चुका है। रामायण और महाभारत के अस्त्र-शस्त्र और कलियुग के हथियार एक-दूसरे से कितना मेल खाते हैं! उनमें इतनी समानता कैसे हो सकती है?

ज़रूर शास्त्रों ने ही कलियुगी वैज्ञानिकों को उसी तरह के शस्त्र बनाने के लिए प्रेरित किया है।

1. मंत्र :- भारत में मंत्रों का बहुत बड़ा महत्व माना जाता है। ईश्वर की आराधना के साथ शस्त्र चलाने के लिए मंत्र उच्चारण भी काफी उपयोगी माने गए हैं।

कार्य क्षमता–मंत्रों द्वारा शस्त्रों को चलाकर शत्रु पर प्रहार किया जाता था।

कलियुग समानता– आवाज से चलने वाले यंत्र

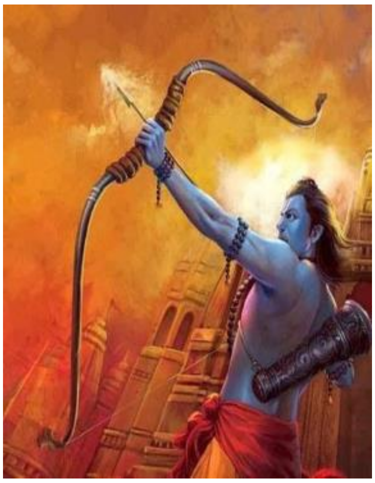

२. पशुपातास्त्र :- यह शस्त्र भगवान शिव की आराधना से प्राप्त किया जाता था। यह भगवान विष्णु के किसी भी शस्त्र से नहीं रुक सकता।

कार्य क्षमता- यह लक्ष्य को पूरी तरह से तबाह कर देता है। लक्ष्य चाहे कैसा भी हो, इसमें उसका अस्तित्व समाप्त करने की क्षमता है।

कलियुग समानता– हाइड्रोजन बम

इंद्रास्त्र :- देवों के राजा इंद्र के इस अस्त्र से एक साथ कई लोगों को मारा जा सकता है।

कार्य क्षमता- यह एक साथ अनेकों बाणों की वर्षा कर सकता है |

कलियुग समानता- मशीन गन

४. सुदर्शन चक्र :- भगवान विष्णु ने सर्वप्रमुख अस्त्र का प्रयोग कई रूपों में किया है। यह केवल भगवान विष्णु की आज्ञा का पालन करता है।

कार्य क्षमता- लक्ष्य को पूरी तरह तबाह कर देता है।

कलियुग समानता- मिसाइल (रशियंस और अमेरिकन्स रूपी यादवों द्वारा बुद्धिरुपी पेट से निकले मूसल।)

ब्रह्मास्त्र :- ब्रह्मा की आराधना से यह शस्त्र प्राप्त किया जाता था | यह एक अचूक और अतिविकराल अस्त्र है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह शत्रु का नाश करके ही समाप्त होता है। इसका प्रतिकार दूसरे ब्रह्मास्त्र से ही हो सकता है।

कार्य क्षमता- लक्ष्य का संपूर्ण विनाश। इससे एक समय पर कई तरह का विनाश किया जा सकता है।

कलियुग समानता– परमाणु बम

६. प्रहार निष्फल करना :- दुश्मनों के प्रहार को अपना नुकसान होने से पहले ही हवा में निष्फल करने की कला भी भारतीय जानते थे।
कलियुग में इसी तकनीकी का आधार लेकर **"एंटी बॅलिस्टिक मिसाईल्स"** बनाऐ गये हैं, जो दुश्मन के वार को हवा में ही खत्म करने में सक्षम हैं। ऐसे ही आजकल **" एंटी सेटेलाईट मिसाईल्स"** बनाए जा रहे हैं जिससे सीधा आसमान के उपग्रहों को तबाह कर सकते हैं। इसकी खासियत इतनी जबरदस्त है कि बिना किसी जीव-हत्या के दुश्मन को बहुत भारी नुकसान पहुँचाया जा सकता है। आज के डिजिटल दौर में तो देश का पूरा काम ही बंद हो सकता है। इसी बेमिसाल विशेषता के चलते यह लोकप्रिय होते जा रहा है तथा इसे और भी विकसित किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त अन्य आयुधों का भी वर्णन महाभारत में है, जो वर्तमान वैज्ञानिक युग की उपलब्धियों से किसी प्रकार कम नहीं है। 'वारुणास्त्र' का वर्णन है जिससे कृत्रिम जलवृष्टि की जा सकती थी। 'वायुव्यास्त्र' से आँधी चला दी जाती थी। 'पर्जन्यास्त्र' से बादल पैदा किये जाते थे। 'भौमास्त्र' से पृथ्वी और पर्वतास्त्र से पर्वत प्रकट करने का भी वर्णन आता है। इसके अतिरिक्त 'ब्रह्मसिर' नाम का दिव्य अस्त्र था, इस अस्त्र में सारे जगत को जला डालने की शक्ति थी।

ऐसे अस्त्र-शस्त्रों की जानकारी से तो समझ आ ही जाता है कि कभी भी युद्ध छिड़ सकता है। आज एक देश दूसरे देश का कट्टर दुश्मन बनकर बैठा है, एक देश ने चिगारी लगाई तो दूसरा उसे पूरा सर्वनाश कर सकता है, उसे महाभारत की तरह भस्मीभूत कर सकता है। तो इसे महाभारत का समय नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? एटम बॉम्ब, मिसाइल्स जैसी सामग्री का निर्माण कब हुआ? इसका अनुमान लगा सकते हैं कि सन् 1945 में हिरोशिमा-नागासाकी में 20-20 मेगावाट की अणुबम्बियाँ गिरी तो उसके कुछ समय पहले से ही यह बनना शुरू हुआ होगा और वही समय भगवान के आने का भी निश्चित होता है; क्योंकि भगवान को ही हर-2 बम-2 अर्थात् जब इस सृष्टि पर आते हैं तो स्वर्ग की स्थापना के साथ-2 पुरानी दुनिया का विनाश भी करते हैं। उनको ही गीता के 11वें अध्याय के 32वें श्लोक में ''कालोऽस्मि'' अर्थात् कालों का काल महाकाल कहा है।

21वीं शताब्दी अर्थात् वर्तमान समय में एक भारत देश ही नहीं, सारे विश्व की जो हालत है, जिसका वर्णन करते हुए गीता में कहा है कि

अनुबन्धं क्षयं हिसा अनवेक्ष्य च पौरुषं। मोहात् आरभ्यते कर्म यत् तत् तामसं उच्यते। 18/25

(ऐटमिक महाविनाश जैसे कर्म से होने वाले परिणाम) हिसा, हानि और अपने सामर्थ्य को न देखकर मूर्खता से मोहपूर्वक जो भी अदूर दृष्टि से सांसारिक कर्म आरम्भ किया जाता है, वह सबके लिए कल्पान्तकालीन कलियुगान्त का असहनीय दुखदायी तामसी कर्म कहा जाता है।

मनुष्य की बुद्धि इतनी तामसी/मूढ़ हो चुकी है कि अपनी ही हानि, हिसा को नहीं देख पा रहा है। आज सृष्टि ऐसे हो गई है जैसे बारूद के ढेर पर बना हुआ मकान कभी भी गिर सकता है, ऐसे ही यह दुनिया हो चुकी है कि अचानक कभी भी, कहीं भी बम विस्फोट हो सकता है, आग लग सकती है। देखने में आ रह है कि कहीं भी भूकम्प आ रहे हैं, बेमौसम बारिश हो रही है, विज्ञान के बनाए संसाधन के प्रदूषण से आज की हवा भी तामसी हो गई है। आकाश में उड़ने वाले वायुयान की भी आपस में टक्कर हो जाती है, शूट कर दिये जाते हैं, उसमें भी खतरा हो गया है। मनुष्य के साथ प्रकृति अर्थात् पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, (ओजोन) आकाश भी तामसी हो चुके हैं।

कलियुग अंत की निशानी में भी मारकण्डेय ऋषि चेतावनी देते हुए कहते हैं कि कलियुग के अंतिम भाग में प्रायः सभी मनुष्य मिथ्यावादी हो जाते हैं। शासन में छली, पापी, असत्यवादी लोग प्रमुखता पाए जाते हैं। वृक्षों पर फल और फूल बहुत कम हो जाएँगे और उन पर बैठने वाले पक्षियों की विविधता भी कम हो जाएगी। ऋतुएँ अपने-2 समय का परिपालन त्याग देंगी। वन्य जीव, पशु-पक्षी अपने प्राकृतिक निवास की बजाए नागरिकों के बनाए बगीचों और विहारों में भ्रमण करने लगेंगे। संपूर्ण दिशाओं में हानिकारक जन्तुओं और सर्पों का बाहुल्य हो जाएगा। वन-बाग और वृक्षों को लोग निर्दयतापूर्वक काट देंगे। युवक अपनी युवावस्था में ही बूढ़े हो जाएँगे, 16 वर्ष में ही उनके बाल पकने लगेंगे। उनका स्वभाव बचपन और किशोरावस्था में ही बड़ों जैसा दिखने लगेगा। चारों ओर अपराध और रक्तपात का बोलबाला हो जाएगा। हिसा में लोगों का मन ज़्यादा लगेगा। अधर्म-ही-अधर्म चारों ओर फैल जाएगा और जो धर्म में तत्पर होगा, उसके समक्ष कठिनाइयाँ-ही-कठिनाइयाँ खड़ी हो जाएँगी, उसका जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा। धर्म तो कहीं टिकेगा ही नहीं, धर्म का बल घट जाएगा और अधर्म बलवान हो जाएगा। भूमि में बोये हुए बीज ठीक प्रकार से नहीं उगेंगे। खेतों की उपजाऊ शक्ति समाप्त हो जाएगी। लोग तालाब-चारागाह, नदियों के तट की भूमि पर भी अतिक्रमण करेंगे। समाज खाद्यान्न के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाएगा। बाजार में झूठे माप-तौल के आधार पर विक्रय प्रक्रिया स्थापित हो जाएगी। व्यवसायी भी बहुत धूर्त होंगे। सत्य और ईमानदारी पर चलने वाले धर्मात्मा दरिद्रता का जीवन जीने को विवश होंगे। लोग सड़कों पर रात बितायेंगे। मनुष्यों में पशुओं और न करने योग्य भोगों (समलिगी) के साथ अप्राकृतिक यौनाचार बढ़ने लगेगा। लोग कन्याओं की चाह रखना बंद कर देंगे। कन्यादान पूर्वक विवाह प्रथा की जगह युवक-युवती स्वयं निर्णय लेकर साथ रहने लगेंगे; पर वे एक-दूसरे के विचार-व्यवहार-कार्य को ज़्यादा नहीं सहेंगे। दूसरे पुरुषों और नारियों से मित्रता में उन्हें आनंद आएगा। अपनों के प्रति वे कठोर हो जाएँगे। अमावस्या के बिना

ही राहू सूर्य पर ग्रहण लगाएगा। गरीब लोग और अधिकांश प्राणी भूख से बिलबिलाकर मरने लगेंगे। चारों ओर प्रचण्ड तापमान, संपूर्ण तालाबों, सरिताओं और नदियों के जल को सुखा देगा। लंबे काल तक पृथ्वी पर वर्षा होनी बंद हो जाएगी। गौवंश जब नष्ट होने लगेगा तब समझ लेना कि युगान्त काल उपस्थित हो गया है।

उपर्युक्त कलियुगांत की निशानियां वर्तमान समय देखने में तो आ ही रही हैं तो इसे महाभारत का समय नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? नज़ूमियों की भविष्यवाणी है कि 5000 वर्ष पहले भी 8 ग्रह आकर इकट्ठे हुए थे और महाभारी महाभारत लड़ाई लगी थी। अब ज़रा बुद्धि से काम लो कि यह वो ही गीता वाला समय तो पुनरावृत नहीं हो ने जा रहा है! अगर वो ही आठ ग्रह आकर इकट्ठे हुए हैं तो यह लड़ाई भी वो ही महाभारत लड़ाई माननी चाहिए जिससे 16 कला स. सतयुगी स्वर्ग की स्थापना हुई थी। फिर इसमें डरने वा घबराने की क्या बात है। यह महाभारत लड़ाई ही स्वर्ग के द्वार खोल ने जा रही है।

"महाभारी महाभारत गृहयुद्ध" जिसके आसार अभी भारत में देखे जा रहे हैं। इसका पक्का प्रूफ ये है कि भारत वर्ष में जितनी राजनीतिक पार्टियाँ पनप रही हैं, उतनी दुनिया के किसी भी देश में राजनीतिक पार्टियों की संख्या इतनी ज़्यादा नहीं हैं। तो सब आपस में लड़ रहे हैं। भारत वर्ष में जितने अधिक धर्मों की आत्मायें ज़्यादा-से-ज़्यादा संख्या में पनप रही हैं, इतने ज़्यादा-से-ज़्यादा धर्म के धर्मावलंबी दूसरे देशों में नहीं हैं इसलिए इस युद्ध का नाम भी महाभारत युद्ध पड़ता है, महाअमेरिका, महाअफ्रीका, महायूरोप नहीं। तो ये महाभारी महाभारत लड़ाई भारत से निकलती है, विदेशों से नहीं निकलती है। भारत की कन्याओं-माताओं के ऊपर खास अत्याचार होते हैं तो भगवान भारत में ही आते हैं और उनकी प्योरिटी की रक्षा करते हैं।

महाभारत युद्ध के लिए शास्त्रों में लिखा है-अठारह अक्षौहिणी सेना थी और एक-एक अक्षौहिणी में लाखों-लाखों की तादाद में हाथी, घोड़े, घुड़सवार, हाथीसवार, रथसवार, और पैदल गिनाए गए। वास्तव में जो संख्या वहाँ गिनाई गई है, तकरीबन उतनी ही जनसंख्या आज की सृष्टि पर मौजूद है। "धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयत्सवः।" (गीता- 1/1) ये (भारत) अनेक धर्मों का क्षेत्र है, युद्ध भूमि है। कलियुग के अंत में ही (अनेक धर्मों के बीच) ऐसे होता है। और (अनेक) धर्मों के आधार पर अपने-2 कर्म काण्ड चलाये हुये हैं। वास्तव में वह कोई लिमिटेड कुरुक्षेत्र शहर का मैदान नहीं था। क्षेत्र माना युद्ध भूमि और कुरु माना कर्म करने की युद्ध भूमि खास यह भारत ही था।

महाभारत में दिखाये भगवान के रूप में कृष्ण अर्जुन को गीता ज्ञान देते हैं तो क्या वास्तव में गीता-ज्ञान-दाता कलाबद्ध कृष्ण हैं? जो आज भी सभी यादगार कृष्ण के मंदिरों में बच्चे के रूप में दिखाया है यह सोचने की बात है कि क्या सन्नद्ध लड़ाई के बीच पढ़ाई हो सकती है? स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है- ज्ञान, भक्ति, योग आदि विषयों की इतनी चर्चा युद्ध-भूमि में, जहाँ विशाल सेनायें लड़ने के लिए बिल्कुल तैयार हों, कैसे संभव हो सकती है। (भारत में विवेकानंद पृष्ठ 314-315) यह वास्तव में कोई एक अर्जुन की बात नहीं है, घर-गृहस्थ में रहकर ईश्वरीय ज्ञान का अर्जन करने वाली नं. वार मनुष्यात्माओं रूपी अनेकों ज्ञानधनार्जन कर्ता अर्जुनों की बात है, जिनको कलियुगांत में परमपिता-परमात्मा अन्यान्य धर्मपिताओं की तरह ही बर्वली सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं।

नवयुग आने की निशानी क्या है? गेट वे टू हैविन इज़ महाभारत। कोई कहे - हम नहीं लड़ेंगे। हम इस युद्ध में से पसार होने वाले नहीं हैं। हम अपना खून-खराबा न होने देंगे और न दूसरों का करेंगे। तो भगवान कहते हैं - वो स्वर्ग में भी नहीं जावेंगे। ये सत्ययुगी स्वर्ग का गेट वे है - महाभारी महाभारत गृहयुद्ध। ये सच्चाई की स्थापना के लिए झूठ से युद्ध करना लाज़मी है। देखो! कैसी भूल-भूलैया है, सब टक्कर खाते ही रहते हैं। लिबरेट करो, शान्ति दो; इतने शांति सम्मेलन करते हैं परंतु सुख-शान्ति का दरवाजा खुलता ही नहीं। खुलना तो दूर रहा, और ही अशांति और दुःख वृद्धि सिवाय कुछ मिलता ही नहीं। चाहते हैं मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट में जावें। वास्तव में अभी इसी महाभारत लड़ाई में मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट खुलने वाले हैं।

दिखाते हैं महाभारत युद्ध द्वापरयुग में हुआ तो यह बात कहाँ तक सत्य है? महाभारत युद्ध के बाद तो अधर्म मिटकर सतधर्म की स्थापना हो जाती है; जो गीता में ही लिखा है – "धर्म संस्थापनार्थाय विनाशाय च दुष्कृताम" (गीता 4-8) लेकिन द्वापरयुग के बाद तो (और ही पापी) कलियुग आ गया, और ही अधर्म बढ़ गया तो वास्तव में परमपिता+परमात्मा चारों युगों के अंत अर्थात् कलियुग

और सतयुग के बीच पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आते हैं। जिसकी यादगार में आज भी भारतीय परम्परा में हर चौथी वर्ष पुरुषोत्तम मास भी मनाते हैं

महाभारत युद्ध का कारण अधर्म हुआ, महाभारत में और रामायण में भी दिखाया है कि एक निम्मित मात्र द्रौपदी या सीता की पुकार भगवान ने सुन ली। आज अधर्म का इतना बोलबाला है कि पूरी नारी जाति को ही खतरा है, तो क्या अनेकों स्त्रियों की पुकार पर भगवान नहीं आएगा? जब अधर्म का बोलबाला होता है तो अधर्म को मिटाकर सत्यधर्म और सतयुग की स्थापना करने हर कल्प यानी चतुर्युगी के बाद परमात्मा को आना पड़ता है, न कि पापी कलियुग की स्थापना के लिए द्वापुर के अंत में आता है ? रामायण में लिखा भी है " कल्प-2 लगि प्रभु-अवतारा"।

यही श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान के अवतरण का समय बताया है ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत। अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदा आत्मानं सृजामि अहं॥ 4/7

हे भरतवंशी! जब-2 {तामसप्रधान कलियुगांत में सात्विक} धर्म की ग्लानि और विधर्म की वृद्धि होती है, तब ही {तो गी.18-66 में कहे 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' अनुसार ही} मैं {साकार अर्जुन/आदम आदिदेव महान देवात्मा में} प्रत्यक्ष होता हूँ।

कलियुगांत की निशानियों से तो ज्ञात हो ही जाता है कि अब परमपिता+परमात्मा का भी अवतरण हो चुका है।

महाभारत काल की पांडवों के लम्बे अज्ञातवस की नगरी उत्तरप्रदेश के काम्पिल ग्राम में ही भगवान का आगमन हो गया है। जो पांचाल देश की राजधानी रही, जहाँ पर आज भी यादगार स्वरुप महाभारत प्रसिद्ध द्रोपदी का ज्ञानयोग्नि का जन्म कुण्ड है, जहाँ पर पाण्डवों ने द्रोपदी स्वयंवर भी किया था। शास्त्रों में भी काम्पिल का महत्व बताते हुए कहा है-

"कम्पिला सद्दशम तीर्थम नास्ति भूमंडले क्विचित।"

कम्पिल के समान दूसरा तीर्थ इस भूमि पर नहीं है। कम्पिल की महिमा करते हुए स्कंदपुराण में कहा है-

"आसीत्कांपिल्यनगरे सोमयाजि कुलोद्भवः। दीक्षितो, यज्ञदत्ताख्यो यज्ञविद्यां विशारदः॥" (स्कन्दपुराण)

अर्थात् काम्पिल्य में सोम यज्ञ करने वाले दीक्षित ब्राह्मणों का निवास था, जो (ज्ञान-) यज्ञविद्या में परम विशारद था।

काम्पिल में ही दीक्षित ब्राह्मण के दिव्य शरीर में शिव निराकार प्रवेश कर पुरानी दुनिया का खलासा और नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं और चेतावनी दे रहें हैं कि वही महाभारी महाभारत गृहयुद्ध सामने खड़ा हुआ है, जिसके लिए गीता में बोला है- हे अर्जुन! ये सब मरे पड़े हैं। अर्जुन को विश्वास नहीं हुआ, तो भगवान ने अपना एडवांस गीता ज्ञान का मुँह खोल करके दिखाय दिया। देख! मेरी इन एटम बॉम्स रूपी दाढ़ों के बीच में जो समुद्र और जमीन के अन्दर पिरोई हुई है, आसमान के अन्दर तैर रही हैं, उन दाढ़ों के बीच में सारा संसार चबाया जाने वाला है। ये एटमिक धमाकों के रूप में सारा संसार अब खत्म हो जाएगा। बचेंगे कौन? जो परमात्मा के प्यारे बच्चे होंगे, जिनको परमात्मा बाप आ करके सन्मुख ज्ञान देते हैं, जो गीता में भी वर्णित है कि "स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।" (2/40) अर्थात् साक्षात् ईश्वर-प्रदत्त अल्पांश आत्मिक स्थिति से महान भय से रक्षण हो सकता है। कुरान में भी कहा है- "कयामत के समय खुदा के बंदे बड़ी मौज में रहेंगे।"

आज 21वीं शताब्दी चल रही है और यही महाभारत काल है और भगवान के आगमन का समय भी। पाण्डव वह जो भगवान को जानते हैं, मानते हैं और उनके बताए हुए रास्ते पर चलते भी हैं, कौरव या रावण वह जो भगवान को जान जाते हैं; लेकिन उनके बताए हुए रास्ते पर चलते नहीं। महाभारत युद्ध में हुए पाण्डव और कौरवों के युद्ध के परिणाम से तो आप सभी भली भाँति अवगत हैं। तो यह कोई शास्त्रों की मात्र कपोल कल्पित बात नहीं, वर्तमान समय भगवान द्वारा प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है और उनके बताए हुए रास्ते पर जो चलेंगे, वह इस महाभारत के समय अपना रक्षण भी कर सकते हैं।

माउण्ट आबू से साक्षात् के प्रैक्टिकल पार्ट द्वारा प्रकाशित ता. वाइज़ मुरलियों में भी सन्नद्ध महाभारत के इशारे दिए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- महाभारी महाभारत युद्ध भी है। शास्त्रों में भी नाम है, फिर उसको कहते हैं- थर्ड वर्ल्ड वार। यह रिहर्सल होती रहेगी। (1914में) फर्स्ट वर्ल्ड वार, (1945 में) सेकेण्ड वर्ल्ड वार, (21 सदी के मध्यादि में) थर्ड वर्ल्ड वार, और अमेरिका-रशिया के यादवों द्वारा निर्मित मिसाइल्स रूपी मूसलों द्वारा फोर्थ वर्ल्ड वार भी है। (रि. मु.1.7.73 पृ.1 अंत)

- यह महाभारत लड़ाई मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेट्स खोलती है। (रात्रि मु. ता. 10.1.67 पृ.1 अंत)
- महाभारत की लड़ाई का समय भी सिर पर है। (मु.ता. 11.4.67 पृ.2 आदि)
- महाभारत लड़ाई लगी थी उस समय ज़रूर भगवान भी होगा। (रात्रि मु.ता. 3.1.68 पृ.1 अंत)
- महाभारी लड़ाई लगी थी एटॉमिक बॉम्स की। यादव भी थे, तो ज़रूर कौरव भी होंगे, पांडव भी होंगे। पांडवों का डिक्टेटर स्वयं गीता का भगवान भी होगा। महाभारी लड़ाई तो है ही गीता की। (मु.ता. 9.1.62 पृ.1 अंत)
- इस महाभारत लड़ाई से ही स्वर्ग के गेट खुलते हैं। (मु.ता. 10.1.73 पृ.3 अंत)
- यह भी समझते हैं महाभारत लड़ाई को 5000 वर्ष हुए। गीता सुनाने वाले की आयु भी 5000 वर्ष है। शिव बाबा के जन्म को भी 5000 वर्ष हुए हैं। (मु.ता. 8.3.73 पृ.2 मध्य)
- तुम कहते हो इस महाभारी महाभारत लड़ाई से अनेक धर्म विनाश हो एक सतयुग की धर्म स्थापना हो जावेगी। (मु.ता. 18.4.73 पृ.4 अंत)
- महाभारत की लड़ाई हुई। द्रौपदी ने पुकारा। यह वही समय है। <u>आगे चल समझेंगे। भगवान कौन है यह किसको भी पता नहीं है</u>। (मु.ता. 14.7.71 पृ.3 अंत)
- इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते हैं? भारत से ही निकलती है। भारत में ही (रुद्र-ज्ञान-) यज्ञ रचा हुआ है। उससे यह विनाश ज्वाला निकलती है। (मु.ता.10.3.67 पृ.3 आदि)